अमर उजाला

बुधवार • 21.04.2021

05

kanpur.amarujala.com

कपास बोएं, 20 हजार का मुनाफा लें

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कपास अनुभाग के डॉ. जगदीश कुमार ने मंगलवार को एडवाइजरी जारी की। बताया कि एक हेक्टेयर में 15 से 18 क्विंटल कपास पैदाकर 20 से 25 हजार रुपये का शुद्ध लाभ प्राप्त लिया जा सकता है। बुवाई का सर्वोत्तम समय 15 अप्रैल से 15 मई तक है। इसके लिए देसी प्रजातियां जैसे आरजे 08, एचडी 123, एचडी 324 और अमेरिकन प्रजातियां जैसे विकास, आरएस 810, आरएस 2013, एचएल 1556 प्रमुख हैं। इसकी बुवाई लाइन में 70 सेंटीमीटर दूरी तथा पौधे 30 सेंटीमीटर दूरी पर करते हैं। 120 किलो यूरिया और 65 किलो डीएपी का प्रयोग करें। गूलर भेदक की रोकथाम के लिए क्विनालफास 25 ईसी 2 लीटर दवा को 600 से 800 लीटर पानी में घोलकर दो-तीन सप्ताह पर तीन या चार बार छिड़काव कर दें। झुलसा रोग से बचाव को डेढ़ किलो ब्लाईटॉक्स 50 प्रतिशत डब्ल्यूपी को कीटनाशक दवा के साथ मिलाकर छिड़काव करें।(संवाद)

राष्ट्रीय
सहारा
कानपुर • बुधवार • 21 अप्रैल • 2021

कपास उत्पादन से प्रति हेक्टेयर 20-25 हजार का लाभ संभव

■ सहारा न्यूज ब्यूरो

कानपुर।

वर्तमान में जलस्तर की कमी, कपास मूल्य वृद्धि, बेहतर सुरक्षा तकनीक, कपास-गेहूं फसल चक्र हेतु अधिक उत्पादन एवं अल्प अवधि की प्रजातियों का विकास कपास की खेती के लिए अनुकूल परिस्थितियां बना रही है। सीएसए कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय में किए गए परीक्षणों के अनुसार कपास के लिए नई उत्पादन एवं फसल सुरक्षा तकनीक को अपनाकर औसत उपज लगभग 15 से 18 कुंतल प्रति हेक्टेयर प्राप्त कर 20 से 25 हजार रुपये प्रति हेक्टेयर शुद्ध लाभ प्राप्त किया जा सकता है।

सीएसए कुलपति डॉक्टर डीआर सिंह की पहल पर जारी किए जा रहे एडवाइजरी के क्रम में विश्वविद्यालय के कपास अनुभाग के प्रभारी अधिकारी डॉक्टर जगदीश कुमार ने कपास की खेती को किसानों के लिए लाभदायक बताया है। उन्होंने बताया कि 'कपास की बुवाई का सर्वोत्तम समय 15 अप्रैल से 15 मई तक रहता है। इसके लिए देसी प्रजातियां जैसे आरजे 08, एचडी 123,

एचडी 324 तथा अमेरिकन प्रजातियां जैसे विकास, आर एस 810, आर एस 2013, एचएल 1556 प्रमुख है। इसकी बुवाई कतारों से कतार की दूरी 70 सेंटीमीटर तथा पौधे से पौधे की दूरी 30 सेंटीमीटर पर करते है। किसान इसके लिए प्रति हेक्टेयर 120 किलो यूरिया तथा 65 किलो डीएपी का प्रयोग कर सकते है। कपास की फसल में खरपतवार प्रबंधन बहुत जरूरी है। किसान खुरपी की सहायता से खरपतवार निकालने तथा घने पौधों को कम करने का काम जरूर करें।उन्होंने बताया कि वर्षा काल के समय खेत में पर्याप्त जल निकासी की सुविधा जरूरी है, जिससे वर्षा का पानी खेत में ठहरने न पाए। कलियां, फूल वह गूलर बनते समय खेत में पर्याप्त नमी होनी चाहिए। कपास की फसल में कीट प्रबंधन के बारे में उन्होंने बताया कि गूलर भेदक की रोकथाम के लिए

सीएसए ने कपास किसानों के लिए जारी की एडवाइजरी

क्विनालफास 25 ईसी 2 लीटर दवा को 600 से 800 लीटर पानी में घोलकर दो-तीन सप्ताह के अंतराल पर तीन या चार बार छिड़काव करना चाहिए। कपास की फसल में साकाडू झुलसा एवं परडी झुलसा बीमारी लगती है, जिसकी रोकथाम के लिए डेढ़ किलोग्राम बलाईटॉक्स 50: डब्ल्यूपी को कीटनाशक दवाइयों के साथ मिलाकर छिड़काव करना चाहिए।डॉक्टर जगदीश कुमार ने बताया कि नकदी फसल कपास के रेशे से कंबल, दरिया बनाने के साथ ही इसका उपयोग फर्श निर्माण में किया जाता है। कपास के रेशे से सूती वस्त्र, मेडिकल कार्य हेतु विभिन्न उत्पाद तथा होजरी के सामानों का निर्माण किया जाता है। कपास से निकलने वाले बिनौले से पशुओं का आहार भी तैयार किया जाता है। उत्तर प्रदेश में कपास का क्षेत्रफल लगभग 9000 हेक्टेयर है। प्रदेश में वर्ष 2018-19 रुई की उत्पादकता ढाई से 3 कुंतल प्रति हेक्टेयर थी।

भाज
कानपुर
21 अप्रैल , 2021
5

कपास की खेती से 20 से 25 हजार रुपये प्रति हेक्टेयर शुद्ध लाभ

कृषि वैज्ञानिक ने किसानों को कपास की फसल के बारे में दिये सुझाव

कानपुर, 20 अप्रैल। सीएसए कानपुर के कुलपति डॉ डी.आर. सिंह के जारी निर्देश के क्रम में आज कपास अनुभाग के प्रभारी अधिकारी डॉ जगदीश कुमार ने बताया कि कपास नकदी फसल है। कपास के रेशे से कंबल, दरियां, फर्श आदि के निर्माण में उपयोग किया जाता है तथा उन्होंने बताया कि कपास के रेशों से सूती वस्त्र, मेडिकल कार्य हेतु प्रयोग तथा होजरी के सामान का निर्माण किया जाता है। उन्होंने बताया कि कपास से निकलने वाले बिनौलो से पशुओं का आहार भी तैयार किया जाता है। डॉ जगदीश कुमार ने बताया कि उत्तर प्रदेश में कपास का क्षेत्रफल लगभग 9000 हेक्टेयर है प्रदेश में वर्ष 2018-19 में रुई की उत्पादकता 2.5 से 3 कुंतल प्रति हेक्टेयर है। डॉ जगदीश ने बताया की वर्तमान में जल स्तर की कमी, कपास मूल्य वृद्धि, बेहतर सुरक्षा तकनीक एवं कपास-गेहूं फसल चक्र हेतु अधिक उत्पादन एवं अल्प अवधि की प्रजातियों का विकास कपास की खेती के लिए अनुकूल परिस्थितियां है। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय में किए गए परीक्षणों के अनुसार नई उत्पादन एवं फसल सुरक्षा तकनीक को अपनाकर औसत उपज लगभग 15 से 18 कुंतल प्रति हेक्टेयर प्राप्त कर 20 से 25 हजार रुपए प्रति हेक्टेयर शुद्ध लाभ प्राप्त किया जा सकता है। डॉक्टर जगदीश ने बताया कि कपास की बुवाई का सर्वोत्तम समय 15 अप्रैल से 15 मई तक सर्वोत्तम रहता है। इसके लिए देसी प्रजातियां जैसे आरजे 08.एचडी 123, एचडी 324 तथा अमेरिकन प्रजातियां जैसे विकास, आर एस 810, आर एस 2013, एच एल 1556 प्रमुख है। डॉ कुमार ने बताया कि कपास की फसल में खरपतवार प्रबंधन बहुत जरूरी है इसके लिए किसान भाई खुरपी की सहायता से खरपतवार निकालने तथा घने पौधों का विरलीकरण कर दें। उन्होंने बताया कि वर्षा काल के समय खेत में पर्याप्त जल निकास की सुविधा हो जिससे वर्षा का पानी खेत में ठहरने न पाए। कलियां, फूल व गूलर बनते समय खेत में पर्याप्त नमी होनी चाहिए। उन्होंने बताया कि कपास की फसल में साकाडू झुलसा एवं अन्य परडी झुलसा बीमारी लगती है जिस की रोकथाम के लिए डेढ़ किलोग्राम ब्लाईटॉक्स 50त्न डब्ल्यूपी को कीटनाशक दवाइयों के साथ मिलाकर छिड़काव कर दें।

21 april_janpress.pdf

जन एक्सप्रेस

हिन्दू नव वर्ष
शुभकामनाएं

एक नजर में...

कपास बहु उपयोगी होने के साथ नगदी फसल

जन एक्सप्रेस/कानपुर नगर। कपास बहु उपयोगी होने के साथ ही नगदी फसल है इसके रेशो से कंबल, दरियां, फर्श, सूती वस्त्र तथा मेडिकल कार्य के लिए प्रयोग किया जाता है वहीं से निकलने वाले बिनौलो से पशुओं का आहार भी तैयार किया जाता है। यह जानकारी सीएसएयू के कुलपति डॉ.डी.आर.सिंह के निर्देश के क्रम में मंगलवार को विश्वविद्यालय के कपास अनुभाग के प्रभारी डॉ. जगदीश कुमार ने देते हुए बताया कि किसान विश्वविद्यालय में किए गए परीक्षणों के अनुसार नई उत्पादन एवं फसल सुरक्षा तकनीक को अपनाकर औसत उपज लगभग 15 से 18 कुंतल प्रति हेक्टेयर प्राप्त कर 20 से 25 हजार रुपए प्रति हेक्टेयर का लाभ प्राप्त कर सकते है। कपास की बुवाई का सर्वोत्तम समय 15 अप्रैल से 15 मई तक रहता है।इसकी प्रमुख देसी प्रजातियां आरजे 08, एचडी 123, एचडी 324 तथा अमेरिकन प्रजातियां जैसे विकास, आर एस 810, आर एस 2013, एच एल 1556 है। उन्होंने बताया कि कपास की फसल में खरपतवार प्रबंधन बहुत जरूरी है किसान खुरपी की सहायता से खरपतवार निकालकर घने पौधों का विरलीकरण कर दें वर्षा काल के समय खेत में पर्याप्त जल निकास की सुविधा होनी चाहिए जिससे वर्षा का पानी खेत में न ठहर पाए। उन्होंने बताया कि कीट प्रबंधन के लिए गूलर भेदक की रोकथाम के लिए क्विनालफास 25 ईसी 2 लीटर दवा को 600 से 800 लीटर पानी में घोलकर दो-तीन सप्ताह के अंतराल पर तीन या चार बार छिड़काव करना चाहिए।

21 april 2021.pdf - Read-only

आर.एन.आई.नं.- UPHIN/2009/44666

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

सत्ता एक्सप्रेस

डी.ए.वी.पी. नई दिल्ली एवं राज्य सरकार द्वारा विज्ञापन मान्यता प्राप्त

वर्ष 12 अंक : 107 कानपुर देहात, बुधवार 21 अप्रैल 2021 Email: sattaexpress@rediffmail.com

15 अप्रेल से 15 मई तक कपास की फसल बोने का है सही समय

दैनिक सत्ता एक्सप्रेस

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर डी.आर. सिंह के जारी निर्देश के क्रम में आज दिनांक 20 अप्रैल 2021 को कपास अनुभाग के प्रभारी अधिकारी डॉक्टर जगदीश कुमार ने बताया कि कपास नकदी फसल है। कपास के रेशे से कंबल, दरियां, फर्श आदि के निर्माण में उपयोग किया जाता है। तथा उन्होंने बताया कि कपास के रेशों से सूती वस्त्र, मेडिकल कार्य हेतु प्रयोग तथा होजरी के सामान का निर्माण किया जाता है। उन्होंने बताया कि कपास से निकलने वाले बिनौलो से पशुओं का आहार भी तैयार किया जाता है। डॉक्टर जगदीश कुमार ने बताया कि उत्तर प्रदेश में कपास का क्षेत्रफल लगभग 9000 हेक्टेयर है प्रदेश में वर्ष 2018–19 में रुई की उत्पादकता 2.5 से 3 कुंतल प्रति हेक्टेयर है। डॉक्टर जगदीश ने बताया की वर्तमान में जल स्तर की कमी, कपास मूल्य वृद्धि, बेहतर सुरक्षा तकनीक एवं कपास –गेहूं फसल चक्र हेतु अधिक उत्पादन एवं अल्प अवधि की प्रजातियों का विकास कपास की खेती के लिए अनुकूल परिस्थितियां है। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय में किए गए परीक्षणों के अनुसार नई उत्पादन एवं फसल सुरक्षा तकनीक को अपनाकर औसत उपज लगभग 15 से 18 कुंतल प्रति हेक्टेयर प्राप्त कर 20 से 25 हजार रुपए प्रति हेक्टेयर शुद्ध लाभ प्राप्त किया जा सकता है। डॉक्टर जगदीश ने बताया कि कपास की बुवाई का सर्वोत्तम समय 15 अप्रैल से 15 मई तक सर्वोत्तम रहता है। इसके लिए देसी प्रजातियां जैसे आरजे 08,एचडी 123, एचडी 324 तथा अमेरिकन प्रजातियां जैसे विकास, आर एस 810, आर एस 2013, एच एल 1556 प्रमुख है। उन्होंने बताया कि इसकी बुवाई कतारों से कतार 70 सेंटीमीटर तथा पौधे से पौधे 30 सेंटीमीटर पर करते हैं। उन्होंने कपास उत्पादक किसान भाइयों को सलाह दी कि उर्वरक प्रयोग हेतु किसान भाई 120 किलो यूरिया तथा 65 किलोग्राम डीएपी का प्रयोग करें। डॉ कुमार ने बताया कि कपास की फसल में खरपतवार प्रबंधन बहुत जरूरी है इसके लिए किसान भाई खुरपी की सहायता से खरपतवार निकालने तथा घने पौधों का विरलीकरण कर दें। उन्होंने बताया कि वर्षा काल के समय खेत में पर्याप्त जल निकास की सुविधा हो जिससे वर्षा का पानी खेत में ठहरने न पाए। कलियां, फूल व गूलर बनते समय खेत में पर्याप्त नमी होनी चाहिए। कपास की फसल में कीट प्रबंधन के बारे में बताया की गूलर भेदक की रोकथाम के लिए क्विनालफास 25 ईसी 2 लीटर दवा को 600 से 800 लीटर पानी में घोलकर दो–तीन सप्ताह के अंतराल पर तीन या चार बार छिड़काव कर दें। उन्होंने बताया कि कपास की फसल में साकाडू झुलसा एवं अन्य परडी झुलसा बीमारी लगती है जिस की रोकथाम के लिए डेढ़ किलोग्राम ब्लाईटॉक्स 50: डब्ल्यूपी को कीटनाशक दवाइयों के साथ मिलाकर छिड़काव कर दें।

वर्ष : 6, अंक : 20 पृष्ठ : 12
कानपुर महानगर, बुधवार
21 अप्रैल, 2021
मूल्य ₹ 2.00

शाश्वत टाइम्स

हिन्दी दैनिक

www.shashwattimes.com

सिद्धगन्धर्वयक्षाद्यैरसुरैरमरैरपि। सेव्यमाना सदा भूयात् सिद्धिदा सिद्धिदायिनी॥

2002 एसटीडीई से प्रतिबंध नहीं हटाने का संयुक्त राज्य अमेरिका का फैसला। **विश्व इतिहास** **2001** बांग्लादेश में भारतीय जवानों की नृशंस हत्या पर भारत ने कड़ा विरोध दर्ज कराया।

कपास के रेशों से सूती वस्त्र, मेडिकल कार्य हेतु प्रयोग होते हैं

शाश्वत टाइम्स कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर डी.आर. सिंह के जारी निर्देश के क्रम में मंगलवार को कपास अनुभाग के प्रभारी अधिकारी डॉक्टर जगदीश कुमार ने बताया कि कपास नकदी फसल है। कपास के रेशे से कंबल, दरियां, फर्श आदि के निर्माण में उपयोग किया जाता है। तथा उन्होंने बताया कि कपास के रेशों से सूती वस्त्र, मेडिकल कार्य हेतु प्रयोग तथा होजरी के सामान का निर्माण किया जाता है। उन्होंने बताया कि कपास से निकलने वाले बिनौलो से पशुओं का आहार भी तैयार किया जाता है। डॉक्टर जगदीश कुमार ने बताया कि उत्तर प्रदेश में कपास का क्षेत्रफल लगभग 9000 हेक्टेयर है प्रदेश में वर्ष 2018-19 में रुई की उत्पादकता 2.5 से 3 कुंतल प्रति हेक्टेयर है। डॉक्टर जगदीश ने बताया की वर्तमान में जल स्तर की कमी, कपास मूल्य वृद्धि, बेहतर सुरक्षा तकनीक एवं कपास - गेहूं फसल चक्र हेतु अधिक उत्पादन एवं अल्प अवधि की प्रजातियों का विकास कपास की खेती के लिए अनुकूल परिस्थितियां है। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय में किए गए परीक्षणों के अनुसार नई उत्पादन एवं फसल सुरक्षा तकनीक को अपनाकर औसत उपज लगभग 15 से 18 कुंतल प्रति हेक्टेयर प्राप्त कर 20 से 25 हजार रुपए प्रति हेक्टेयर शुद्ध लाभ प्राप्त किया जा सकता है। डॉक्टर जगदीश ने बताया कि कपास की बुवाई का सर्वोत्तम समय 15 अप्रैल से 15 मई तक सर्वोत्तम रहता है। इसके लिए देसी प्रजातियां जैसे आरजे 08,एचडी 123, एचडी 324 तथा अमेरिकन प्रजातियां जैसे विकास, आर एस 810, आर एस 2013, एच एल 1556 प्रमुख है। उन्होंने बताया कि इसकी बुवाई कतारों से कतार 70 सेंटीमीटर तथा पौधे से पौधे 30 सेंटीमीटर पर करते हैं। उन्होंने कपास उत्पादक किसान भाइयों को सलाह दी कि उर्वरक प्रयोग हेतु किसान भाई 120 किलो यूरिया तथा 65 किलोग्राम डीएपी का प्रयोग करें । डॉ कुमार ने बताया कि कपास की फसल में खरपतवार प्रबंधन बहुत जरूरी है इसके लिए किसान भाई खुरपी की सहायता से खरपतवार निकालने तथा घने पौधों का विरलीकरण कर दें। उन्होंने बताया कि वर्षा काल के समय खेत में पर्याप्त जल निकास की सुविधा हो जिससे वर्षा का पानी खेत में ठहरने न पाए। कलियां, फूल व गूलर बनते समय खेत में पर्याप्त नमी होनी चाहिए। कपास की फसल में कीट प्रबंधन के बारे में बताया की गूलर भेदक की रोकथाम के लिए क्विनालफास 25 ईसी 2 लीटर दवा को 600 से 800 लीटर पानी में घोलकर दो-तीन सप्ताह के अंतराल पर तीन या चार बार छिड़काव कर दें। उन्होंने बताया कि कपास की फसल में साकाडू झुलसा एवं अन्य परडी झुलसा बीमारी लगती है जिस की रोकथाम के लिए डेढ़ किलोग्राम ब्लाईटॉक्स 50% डब्ल्यूपी को कीटनाशक दवाइयों के साथ मिलाकर छिड़काव कर दें।

हिन्दी दैनिक समाचार

RNI No. UPHIN/2007/23059

विशाल प्रदेश

प्रधान सम्पादक- मोहम्मद नासिर

कानपुर का लोकप्रिय समाचार पत्र

वर्ष : 15 | अंक : 89 | बुधवार 21 अप्रैल 2021 | पृष्ठ : 8 | मूल्य : 2.00

संक्षिप्त खबरें...

पीएम नरेंद्र मोदी का देश को संदेशः टीका और रोजगार साथ चलेंगे

राहुल गांधी कोरोना पॉजिटिव, संपर्क में

सीएसए विश्वविद्यालय कपास अनुभाग के प्रभारी डॉ0 जगदीश कपास कपास किसानों के लिए जारी की एडवाइजरी

दीपक गौड़

कानपुर(विशाल प्रदेश)चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉ0 डी.आर. सिंह के जारी निर्देश के क्रम में कपास अनुभाग के प्रभारी अधिकारी डॉ0 जगदीश कुमार ने बताया कि कपास नकदी फसल है कपास के रेशे से कंबल, दरियां, फर्श आदि के निर्माण में उपयोग किया जाता है तथा उन्होंने बताया कि कपास के रेशों से सूती वस्त्र, मेडिकल कार्य हेतु प्रयोग तथा होजरी के सामान का निर्माण किया जाता है उन्होंने बताया कि कपास से निकलने वाले बिनौलो से पशुओं का आहार भी तैयार किया जाता है डॉ0 जगदीश कुमार ने बताया कि उत्तर प्रदेश में कपास का क्षेत्रफल लगभग 9000 हेक्टेयर है प्रदेश में वर्ष 2018-19 में रुई की उत्पादकता 2.5 से 3 कुंतल प्रति हेक्टेयर है डॉ0 जगदीश ने बताया की वर्तमान में जल स्तर की कमी, कपास मूल्य वृद्धि, बेहतर सुरक्षा तकनीक एवं कपास-गेहूं फसल चक्र हेतु अधिक उत्पादन एवं अल्प अवधि की प्रजातियों का विकास कपास की खेती के लिए अनुकूल परिस्थितियां है उन्होंने बताया

कि विश्वविद्यालय में किए गए परीक्षणों के अनुसार नई उत्पादन एवं फसल सुरक्षा तकनीक को अपनाकर औसत उपज लगभग 15 से 18 कुंतल प्रति हेक्टेयर प्राप्त कर 20 से 25 हजार रुपए प्रति हेक्टेयर शुद्ध लाभ प्राप्त किया जा सकता है डॉक्टर जगदीश ने बताया कि कपास की बुवाई का सर्वोत्तम समय 15 अप्रैल से 15 मई तक सर्वोत्तम रहता है इसके लिए देसी प्रजातियां जैसे आरजे 08, एचडी 123, एचडी 324 तथा अमेरिकन प्रजातियां जैसे विकास, आर एस 810, आर एस 2013, एच एल 1556 प्रमुख है उन्होंने बताया कि इसकी बुवाई कतारों से कतार 70 सेंटीमीटर तथा पौधे से पौधे 30 सेंटीमीटर पर करते हैं उन्होंने कपास उत्पादक किसान भाइयों को सलाह दी कि उर्वरक प्रयोग हेतु किसान भाई 120 किलो यूरिया तथा 65 किलोग्राम डीएपी का प्रयोग करें डॉ कुमार ने बताया कि कपास की फसल में खरपतवार प्रबंधन बहुत जरूरी है इसके लिए किसान भाई खुरपी की सहायता से खरपतवार निकालने तथा घने पौधों का विरलीकरण कर दें उन्होंने बताया कि वर्षा काल के समय खेत में पर्याप्त जल निकास की सुविधा हो जिससे वर्षा का पानी खेत में ठहरने न पाए कलियां, फूल व गूलर बनते समय खेत में पर्याप्त नमी होनी चाहिए कपास की फसल में कीट प्रबंधन के बारे में बताया की गूलर भेदक की रोकथाम के लिए क्विनालफास 25 ईसी 2 लीटर दवा को 600 से 800 लीटर पानी में घोलकर दो-तीन सप्ताह के अंतराल पर तीन या चार बार छिड़काव कर दें उन्होंने बताया कि कपास की फसल में साकाडू झुलसा एवं अन्य परडी झुलसा बीमारी लगती है जिस की रोकथाम के लिए डेढ़ किलोग्राम ब्लाईटॉक्स 50इडब्ल्यूपी को कीटनाशक दवाइयों के साथ मिलाकर छिड़काव कर दें

कपास नकदी फसल है, इसके उत्पादन से लाभ कमाया जा सकता है: डॉ जगदीश कुमार

RIO NEWS24 12 hours ago कृषि, समाचार

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर डी.आर. सिंह के जारी निर्देश के क्रम में मंगलवार को कपास अनुभाग के प्रभारी अधिकारी डॉक्टर जगदीश कुमार ने बताया कि कपास नकदी फसल है। कपास के रेशे से कंबल, दरियां, फर्श आदि के निर्माण में नकदी फसल है। कपास के रेशे से कंबल, दरियां, फर्श आदि के निर्माण में उपयोग किया जाता है। तथा उन्होंने बताया कि कपास के रेशों से सूती वस्त्र, मेडिकल कार्य हेतु प्रयोग तथा होजरी के सामान का निर्माण किया जाता है। उन्होंने बताया कि कपास से निकलने वाले बिनौलो से पशुओं का आहार भी तैयार किया जाता है। डॉक्टर जगदीश कुमार ने बताया कि उत्तर प्रदेश में कपास का क्षेत्रफल लगभग 9000 हेक्टेयर है प्रदेश में वर्ष 2018-19 में रुई की उत्पादकता 2.5 से 3 कुंतल प्रति हेक्टेयर है। डॉक्टर जगदीश ने बताया की वर्तमान में जल स्तर की कमी, कपास मूल्य वृद्धि, बेहतर सुरक्षा तकनीक एवं कपास -गेहूं फसल चक्र हेतु अधिक उत्पादन एवं अल्प अवधि की प्रजातियों का विकास कपास की खेती के लिए अनुकूल परिस्थितियां है। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय में किए गए परीक्षणों के अनुसार नई उत्पादन एवं फसल सुरक्षा तकनीक को अपनाकर औसत उपज लगभग 15 से 18 कुंतल प्रति हेक्टेयर प्राप्त कर 20 से 25 डॉक्टर जगदीश कुमारहजार रुपए प्रति हेक्टेयर शुद्ध लाभ प्राप्त किया जा सकता है।

डॉक्टर जगदीश ने बताया कि कपास की बुवाई का सर्वोत्तम समय 15 अप्रैल से 15 मई तक सर्वोत्तम रहता है। इसके लिए देसी प्रजातियां जैसे आरजे 08,एचडी 123, एचडी 324 तथा अमेरिकन प्रजातियां जैसे विकास, आर एस 810, आर एस 2013, एच एल 1556 प्रमुख है। उन्होंने बताया कि इसकी बुवाई कतारों से कतार 70 सेंटीमीटर तथा पौधे से पौधे 30 सेंटीमीटर पर करते हैं। उन्होंने कपास उत्पादक किसान भाइयों को सलाह दी कि उर्वरक प्रयोग हेतु किसान भाई 120 किलो यूरिया तथा 65 किलोग्राम डीएपी का प्रयोग करें । डॉ कुमार ने बताया कि कपास की फसल में खरपतवार प्रबंधन बहुत जरूरी है इसके लिए किसान भाई खुरपी की सहायता से खरपतवार निकालने तथा घने पौधों का विरलीकरण कर दें। उन्होंने बताया कि वर्षा काल के समय खेत में पर्याप्त जल निकास की सुविधा हो जिससे वर्षा का पानी खेत में ठहरने न पाए। कलियां, फूल व गूलर बनते समय खेत में पर्याप्त नमी होनी चाहिए। कपास की फसल में कीट प्रबंधन के बारे में बताया की गूलर भेदक की रोकथाम के लिए क्विनालफास 25 ईसी 2 लीटर दवा को 600 से 800 लीटर पानी में घोलकर दो-तीन सप्ताह के अंतराल पर तीन या चार बार छिड़काव कर दें। उन्होंने बताया कि कपास की फसल में साकाडू झुलसा एवं अन्य परडी झुलसा बीमारी लगती है जिस की रोकथाम के लिए डेढ़ किलोग्राम ब्लाईटॉक्स 50% डब्लूपी को कीटनाशक दवाइयों के साथ मिलाकर छिड़काव कर दें।